(घाटियों का स्वर)

डेने सिटम डोनुना; पिलू जार्जु करिया लाये-कारिया लायी; आडा यी ई मादु नअ सी ई

(तागिन लोकगीत)

तारो सिन्दिक

(चयन- यापी बायोर)

(1)

"डेने सिटम डोनुना
डेने गिटम डोनुना
लेमिपोलुकार्डुकु
लेनिपोलुकार्डुकु
चिरपीरपापुकमेंदु कु
ताकम पापुकमेंदुकु
गिधि आपुपुडु कु
गेयुआपुपुडुकु
डेने सिटम डोनुना
डेने गिटम डोनुना

डेरि आने न्यी कुमलाजु
डुगुआने न्यी कुमलाजु
मिल्ली लीमा लीलाजू
अमली लीमा लीलाजू
डेने सीटम डोनुना
डेने गिटम डोनुना
यूलुपोलुकारडुकु

तेनलुपोलुकारडुकु
न्यिनजिरुवाहोलाजू
पोजिरुवा हुलाजू
डेने सिटोम डोनुना
डेने गिटोम डोनुना"

भावार्थ:

हम सब महिला समूह हैं, हम औरतें साथ रहती हैं। अप्रैल का महीना आ गया है 'चिरपीर-पापोक' पक्षी ने गाना शुरू कर दिया है। 'तकम-पापुक' पक्षी ने भी चहचहाना शुरू कर दिया है। 'गिद्धी' के फूलों ने खिलना शुरू कर दिया है और 'गेयू' के फूल भी खिलने लगे हैं। हम सब महिला समूह हैं, हम औरतें साथ रहती हैं। भरपूर फसल के लिए हम सभी को देवी 'दुगु' से प्रार्थना करनी चाहिए, आओ हम सभी मिलकर बाजरा और धान बोयें। हम सब महिला समूह हैं, हम औरतें साथ रहती हैं। जून का महीना आ गया है, जुलाई का महीना आ गया है, धान का खेत पकना शुरू हो गया है और मक्के के पौधे में भी फूल आने लगे हैं। धान और मक्के के खेत में निराई का समय आ गया है। हम सब महिला समूह हैं, हम औरतें साथ रहती हैं।

(2)

"पिलू जार्जु करिया लाये- कारिया लायी
आनअ गअ लअरुम आ रुमअ लायी- रुमअ लायी
पिलू जारजु कारिया लायी-कारिया लायी
आनअ गअ जअतअ अम गअमअ लायी-गअमअ लायी
पिलू जारजु कारिया लायी-कारिया लायी
आनअ गअ सअतअ अम होकमअ लायी होकमअ लायी
पिलू जारजु कारिया लायी
कारिया लायी आनअ गअ मोरबी आ मोरमअ लायी- मोरमअ लायी पिलू जारजु कारिया लायी- कारिया लायी आनअ अ कोतअ अम किमअ लायी''

भावार्थ

इसमें 'पिलू' नामक एक जंगली पौधे और खेतों में उगाये जाने वाले धान का ज़िक्र है। कथा यह है कि पिलू और धान का पौधा एक समय किसी रिश्तेदार के यहाँ विवाह समारोह में भाग लेने के लिए जा रहे थे। पिलू आगे और धान का पौधा पीछे-पीछे चल रहा था। पिलू की रफ़्तार कम करने के लिए धान के पौधे ने उनसे कहा कि थोड़ा रुक जाओ, मुझे मेरी माँ का कंगन पहन लेने दो। थोड़ी दूर चलने के बाद फिर कहा कि मुझे मेरी माँ के कपड़े पहन लेने दो। गीत में प्रयुक्त पुनरावृत्त वाक्य 'कारिया लायी' का अर्थ है 'मेरे लिए रुको' तथा 'गअमअ लायी' का अर्थ 'पहनने दो'। इस प्रकार कपड़े और अन्य आभूषण पहनने के बहाने पिलू को इंतजार करवा-करवा कर वह उनसे आगे निकल गया और पिलू पीछे रह गया। इसी से तागिन जनपद में यह लोक-विश्वास विकसित हुआ कि पिलू नामक पौधे में फूल खिलने से पहले खेतों में धान उग आता है। पिलू के फूल खिलते-खिलते धान की कटाई का समय समीप होने लगता है। अत: पिलू के फूल का खिलना एक प्रकार से प्रकृति का संकेत है कि फसल कटने का समय आ चुका है।

(3)

"आङा यी ई मादु नअ सी ई
हये ला आ मादु नअ सी ई

ङाने नगु बरी ई
दुने नगु बरी ई
माकते नगु बरी ई
रीकने नगु बरी ई

रिगु नगु बरी ई
कियी नगु बरी ई

मुयी नगु बरी ई
दोलू हयेरी ई
दोगुम हुये री ई
गुंगी हये री ई
बागी हये री ई''

भावार्थ-

कौन है जिसने मेरे लाडले को मारा। कहीं मेरी माँ तो नहीं, कही मेरे पिता तो नहीं जिसने मेरे लाडले को रुलाया। कहीं मेरी बहन तो नहीं, कहीं मेरे बहनोई तो नहीं। कहीं मेरा साला/देवर तो नहीं। कहीं मेरी साली/ननद तो नहीं। कहीं मेरे भईया तो नहीं, कहीं मेरी दीदी तो नहीं। जिसने मेरे लाडले की आँखों में आँसू लाया कहीं वो मेरे भतीजा-भतीजी या भांजा-भांजी तो नहीं। या फिर पड़ोस का कोई व्यक्ति तो नहीं या आस-पास के कोई गाँव का तो नहीं, जिसने मेरे लाडले को रुलाया।

(4)

"डेरिं ङोना आने ङोना -3
यारिगिनची लो गेरप्लजू
यापरगिंची लो गेरप्लजू
डेरिं ङोना आने ङोना -2
मोमा नम्तु गो रुरप्लाकुजू
मोमो रेंङो गो मरप्लाकुजू

डेरिं डोना आने डोना -2
चिरमिलिमा लोलिलिक्लाकुजू
मेलो लिमा लो लिलिक्लाकुजू।
डेरिं डोना आने डोना -2
मिजुरुमालोरंडीलाकुजू
अमजुग मालो इडीला कुजू
डेरिं डोना आने डोना –
मिजिनिमुम ए मुमरी प्रेकुन्यी
अमली निमुम ए मुमरी प्रे कुन्यी
डेरिं डोना आने डोना -2
केके पाता न कलम ला कुजू
चिरमेमचिक गो चिक्कुमलाजु
मेलोयोर गो यॉर्ककुमलाकुजु
डेरिं डोना आने डोना -
सुरिडीसी लो सिक्किुम कुजु
सुमकोदेक लो अग्कुमला कुजु"

भावार्थ

हम कृषि की देवी हैं, हमारी 'नारीगिनची' उठाओ (बीज ले जाने के लिए बैग या टोकरी) 'यापर गिनची' उठाओ (जलावन की लकड़ी ले जाने के लिए टोकरी)। हम कृषि की देवी हैं, आएं हम सभी अपने आप को निराई-गुड़ाई में व्यस्त करें, आएं अपने आप को अन्य कृषि कार्यों में व्यस्त करें। हम कृषि की देवी हैं, चलो खेत में हम धान और बाजरे उगाते हैं, हम कृषि की देवी हैं। चलो हम सब बाजरे के खेत में निराई करते हैं और फिर धान के खेत में निराई करते हैं क्योंकि हम कृषि की देवी हैं। बाजरे में फूल आने शुरू हो गए हैं, धान में भी फूल आने शुरू हो गए हैं, इसलिए चलो चिड़ियों को भगा देते हैं कि वह धान चुरा न ले जाएं। आएं, धान की फसल लें और उसे एकत्र करें, और बाजरे या ज्वार को भी इकट्ठा करें क्योंकि हम कृषि की देवी हैं, दोनों अनाजों को धान्यागार में सही ढंग से भंडारित करें।

*(**लेखकीय परिचय :** अरुणाचल प्रदेश के सुपरिचित युवा कवि और कहानीकार तारो सिन्दिक देरा नातुङ शासकीय महाविद्यालय, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। आपको साहित्य अकादमी का 'युवा सम्मान' मिला है और आपकी प्रकाशित कृतियाँ हैं- 'अक्षरों की विनती', 'फिर आना तुम', 'तागिन लोक-साहित्य' आदि।*
मोबा: 9402963147, ई-मेल : tarosindik@gmail.com)